इकाई 22 मुगलकालीन नगरों की स्थानिक विशेषताएँ*

संरचना

22.1 प्रस्तावना

22.2 शक्ति और सत्ता के केंद्रों के रूप में नगर

22.3 पितृसत्तात्मक नौकरशाही नगर

22.4 शिविर नगर

22.5 ग्रामीण-शहरी नैरंतर्य: कस्बा

22.6 नगरीय परिदृश्य

22.6.1 योजना और किलाबंदी

22.6.2 *चौक*

22.6.3 धार्मिक स्थल

22.6.4 *कारवां सराय*

22.7 मुगलकालीन नगरों में उद्यान

22.8 मुगलकालीन नगरों की जनसंख्या

22.9 सारांश

22.10 अभ्यास

22.11 संदर्भ ग्रंथ

22.1 प्रस्तावना

आईन-ए अकबरी में अबुल फजल लिखता है, 'जो लोग पूरे विश्व से संबद्ध होते हैं, वे नगरों में एकत्र होंगे। इसके बिना प्रगति संभव नहीं है'। यह कथन स्पष्ट रूप से मध्य काल में नगरों के महत्व और उनकी महानगरीय प्रकृति का सूचक है। नगर ऐसे अभिसरण केंद्रों के रूप में थे जहाँ सभी क्षेत्रों के *लोगों* की हलचल थी तथा जहां जीवन के समस्त सुख प्राप्त किए जा सकते थे।

मुगल काल में *कस्बा*, *बल्दा*, *शहर* और *बंदर* इत्यादि शब्द विभिन्न प्रकार के शहरों, महानगरों और समुद्रतटीय शहरों को दर्शाने के लिए प्रयोग किए जाते थे। मध्यकालीन इतिहासकारों की दृष्टि में छोटे नगर और बड़े शहरों के बीच एक स्पष्ट अंतर था। *शहर* (फारसी) / *बल्दा* (अरबी) का इस्तेमाल एक बड़े नगर को संबोधित करने के लिए किया जाता था। *बहार-ए आजम* उल्लेख करता है कि शहरों में शानदार भवन और बेहतरीन बाग-बगीचे होते हैं। राजधानी शहरों को *दार-उल खिलाफत* के रूप में संबोधित किया जाता था। *बंदर* एक बंदरगाह शहर होता था; जबकि ख्वाजा यासीन (महमूद, 2000: 249) के अनुसार *कस्बा* 'एक बड़ा गांव था जिसके द्वारा *परगना* विशेष को जाना जाता था'। इस प्रकार *कस्बा* एक 'ग्रामीण-शहरी' केंद्र था; एक ऐसा शहर जिसमें गांवों की झलक भी होती थी। एक नव-स्थापित केंद्र के साथ *आबाद* प्रत्यय जुड़ा होता था;

* प्रो. आभा सिंह, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

जबकि पुर प्रत्यय एक *मंडी* या एक उपनगर के लिए प्रयुक्त होता था। इस प्रकार प्रारंभिक मध्य काल में प्रयुक्त शब्द *पुर* जो *नगर* का पर्याय था, इसका अर्थ मध्य काल में परिवर्तित हो गया और इसके साथ-साथ कुछ नई शब्दावली भी प्रयोग में आईं और शहरी परिदृश्य की प्रकृति भी बदली।

22.2 शक्ति और सत्ता के केंद्रों के रूप में नगर

कैथरीन एशर के अनुसार शाही महलों के निर्माण स्थल का चयन कुछ हद तक 'नियंत्रण के रूपकों' को चिह्नित करता है। बाबर द्वारा अपनी जीत के स्थल पर आगरा में अपने उद्यान-निवास का चयन 'हिंदुस्तान को अपने कब्जे में करने और अपने अनुसार ढालने की उसकी अपनी क्षमता का प्रतीकस्वरूप था'। इसी प्रकार, हुमायूं द्वारा पांडवों की पौराणिक राजधानी इंद्रप्रस्थ की जगह पर दीनपनाह का निर्माण करने का निर्णय 'एक प्राचीन पूर्व-इस्लामी अतीत' से संबंध स्थापित करना था। अकबर द्वारा इलाहाबाद में किले का निर्माण 'पूर्व परंपराओं पर मुगलों के अधिकार का स्पष्ट प्रतीक था, और साथ ही यह अतीत से जुड़ने का एक जरिया भी था' (एशर, 1993: 281)। ऐबा कॉक के अनुसार, शाहजहां के काल में शाहजहां के दिल्ली के राजप्रासाद के जन सभागार में झरोखों के आलंब दंड और बंगला छत, सुलेमानी कल्पना का जागरूक प्रक्षेपण है' (ऐशर 1993: 283 में उद्धृत)। प्राच्यवादी यह तर्क देते हैं कि एशियाई इस्लामी शहरों का अस्तित्व राजा की शक्ति और सत्ता पर आधिपत्य था। पेरी एंडरसन के अनुसार, 'इस्लामी शहरों का भविष्य आम तौर पर राज्य के द्वारा निर्धारित किया जाता था जिसमें उनकी समृद्धि की झलक हो' (चेनोय, 2015: 4 में उद्धृत)। मुगलों द्वारा निर्मित राजधानी नगरों में उनकी भव्यता, शक्ति और सत्ता की नाटकीय अभिव्यक्ति परिलक्षित होती थी। चांदनी चौक, इस्फहान के चहारबाग के सदृश्य और साथ ही शाहजहांबाद की जामा मस्जिद को *'सफाविद मस्जिद-ए शाह'* से श्रेष्ठ बनाने की कोशिश की गई (हैम्ब्ली, 1982: 446)। राजधानी शहर के निर्माण में राजसी जुलूसों का 'वैभव', 'कौतुकतापूर्ण प्रदर्शन' और 'सार्वजनिक ठाट-बाट' के प्रदर्शन की योजना का विचार निहित था। 'राजप्रासाद' एक 'मंच' और 'रंगमहल' की भूमिका निभाता था जिसके चारों ओर राजनीतिक, सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और धार्मिक वैभव, उत्सव और संस्थाओं की 'आभा' प्रवाहित होती थी। 'यह नाटक के भीतर एक नाटक की तरह था ... जिसमें दरबारियों के बीच एक झूठा शिष्टाचार का संबंध था जो कि सच्चा प्रतीत होता था'। मुगल शहरों ने 'सम्राट की दिव्यता का प्रदर्शन किया और उसका जश्न मनाया'। शाही उत्सव, धार्मिक समारोह, जन्म और मृत्यु के समारोह, सगाई समारोह इत्यादि 'शक्ति तथा वैभव के आडंबरपूर्ण प्रदर्शन' प्रतीत होते थे जिसमें 'प्रतीकात्मक रूप से पूरे नगर को विनियोजित' किया जाता था (पेट्रुसियोली, 2015: 542-543)। प्रांतीय गवर्नरों की उप-साम्राज्यीय संरचनाएं, प्रांतीय और स्थानीय स्तरों पर समान रूप से शक्ति और सत्ता के आडंबरपूर्ण प्रदर्शन को प्रदर्शित करती थी।

शाही महल में शाही दर्शक दीर्घा (*झरोखा दर्शन*) के लिए स्थान चिह्नित किया गया था जो शहर को समाहित करता था। यह मुगल शासकों की *दैवीय* राजनीतिक सत्ता का प्रतीक है; सम्राट, पृथ्वी पर ईश्वर के प्रकाश का प्रतीक (*जिल-अल अल्लाह*) समझा जाता था। अकबर के शासन काल से ही सभी मुगल राजधानी शहर – आगरा, फतहपुर सीकरी, शाहजहानाबाद और लाहौर के शाही महलों में *झरोखा दर्शन* के लिए स्थान निर्दिष्ट किया गया। ऐशर (1993: 282) का तर्क है, 'चूंकि मुगल स्वयं को अर्ध-दिव्य मानते थे, अपने स्वयं के दरबारी समारोह में उसके सभी संदर्भों में – धर्मनिरपेक्ष और पवित्र – उनके द्वारा दर्शन का रूपांतरण जानबूझकर किया गया था।' "इस *झरोखा दर्शन* समारोह का प्रभाव इतना ज्यादा था कि हर रोज सैकड़ों लोग सम्राट की एक झलक पाने के लिए इकट्ठे हो जाते थे। कुछ लोग तो नियमित रूप से हर रोज आते थे, जिससे एक अलग वर्ग, जो *दर्शनिया* के नाम से जाना जाता था, का उदय हुआ। वे तब तक कुछ भी नहीं खाते थे जब तक कि वे सम्राट की एक झलक नहीं पा लेते थे।

अकबर द्वारा प्रारंभ किया गया यह क्रम औरंगजेब के शासनकाल तक अनवरत रूप से जारी रहा।

मुगल सम्राटों ने भी शहरी परिदृश्य का इस्तेमाल डर और सत्ता का दिखावा बनाए रखने के लिए किया। जब औरंगजेब ने दारा शिकोह को हराया और दारा और उसके पुत्र को अपने अधीन कर लिया, उसने उन्हें जंजीरों में जकड़कर तेज धूप में शाहजहानाबाद की गलियों में घुमाया। यहां, औरंगजेब ने अपनी शक्ति और सत्ता को वैध बनाने के लिए शहरी परिदृश्य का इस्तेमाल किया।

22.3 पितृसत्तात्मक-नौकरशाही नगर

ब्लेक इस अवधारणा से प्रारंभ करते हैं कि – सार्वभौम एशियाई नगरों और पश्चिम के नगरों के चरित्रों में अंतर था। ब्लेक ने मुगल साम्राज्य को 'पितृसत्तात्मक-नौकरशाही' की तरह और राजसी शहर को सम्राट के साथ 'निजी संबंधों' से बंधे शाही महल के विस्तार के रूप में प्रदर्शित किया है, जिनका संबंध एक पिता और पुत्र की तरह का था। यहां तक कि सभी प्रकार के उत्पादन और विनिमय संबंधों, उपभोग के तरीकों और नगर में सामाजिक संपर्कों में भी शाही परिवार और कुलीन जनों की जीवन शैली की झलक दिखती थी; संस्कृति के क्षेत्र में भी 'दरबारी संस्कृति' का ही प्रभुत्व था। राजा (संरक्षक) और कुलीन जनों (यजमान) का शहरी परिदृश्य पर काफी प्रभाव था। पश्चिमी शहरों के विपरीत यहाँ स्वयंसेवी नगरपालिका का कोई अस्तित्व नहीं था और न ही एक समूह के रूप में नगर में रहने वालों के बीच वर्ग चेतना ही थी। ब्लेक (1991: 25) का तर्क है कि, 'एक सार्वभौम नगर के रूप में, शाहजहानाबाद को मुगल साम्राज्य के पितृसत्तात्मक-नौकरशाही चरित्र के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। नगर विशिष्ट रूप से राज्य के साथ संबंधित था, और यह राज्य का व्यक्तिगत, कुटुम्ब-उन्मुख चरित्र था जो शहरी विन्यास तथा शैली को निर्धारित करता था ... नगर में शाही भवनों का बोलबाला था ... शाहजहानाबाद, राज्य के पितृसत्तात्मक-नौकरशाही परिसर का शहरी निचोड़ था और शहरों के आवासों में राजकीय भवनों की झलक दिखती थी।' हालांकि कियो इजुका (1991: 34), ब्लेक की थीसिस पर सीधे तौर पर चर्चा नहीं करते हैं, लेकिन शाहजहानाबाद के शहरीकरण की चर्चा करते हुए इस बात पर जोर अवश्य डालते हैं कि 'सम्राट की बुनियादी जरूरतों और विचारों के मुतबिक ही शहरी रूपों तथा स्वरूपों का विकास हुआ जिसमें सामाजिक योजनाओं को खास तवज्जो नहीं दी गई'। इस प्रकार नगर, सम्राट और उनके कुलीन जनों के क्रियाकलापों से ज्यादा प्रभवित रहा। परंतु, शहर के बारे में लिखते हुए अबुल फजल शहरों के राजशाही प्रभाव को पूरी तरह से नजरअंदाज करता है। इसके बजाय, उसका तर्क है कि, 'एक शहर को ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जहां विभिन्न प्रकार के शिल्पकार निवास करते हैं'। अगर शाहजहानाबाद नगर की बनावट को गौर से देखा जाए, तो हम पाएंगे कि बाजारों की चहल-पहल की मौजूदगी के अतिरिक्त पेशेवरों, व्यापारियों और कलाकारों के लिए अलग-अलग परिक्षेत्रों का निर्माण किया गया था। चेनाय (2015: 9) ब्लेक की आलोचना करते हुए तर्क देती हैं कि, 'सिर्फ पितृसत्तात्मक-नौकरशाही साम्राज्य की सोच ही शहर के निर्माण में परिलक्षित नहीं होती। शाहजहानाबाद शहर, महल प्रासाद, कुछ हवलियों, झोपड़ियों के समूहों, मस्जिदों और कुछ बड़े बाजार तक ही सीमित नहीं था। बल्कि मध्यम आय वर्ग वाले लोग भी यहाँ अधिक संख्या में रहा करते थे जैसे पेशेवर, समृद्ध और छोटे व्यापारी और निम्न श्रेणी के मनसबदार, आदि ... '

फतेहपुर सीकरी की शहरी योजना के बारे में रेजावी कहते हैं कि यह ब्लेक की अवधारणा से बिल्कुल उलट छवि प्रस्तुत करता है। 'कुलीन जनों के निवास स्थान में सिर्फ एक रसोईघर होता था... दिलचस्प है कि फतहपुर सीकरी के महल में भी कुलीन जनों के निवास स्थान की तरह सिर्फ एक *मतबख* (रसोई) था ... इसी तरह एक ही *आबदारखाने* से समस्त महल में आपूर्ति की जाती थी ... प्रधान *हरमसरा* (कुलीन जन के

निवास के जनानखाना के समतुल्य) में सम्राट की अनेकों पत्नियाँ एक साथ रहा करती थी, हालांकि मुगल इतने साधन संपन्न थे कि अपनी प्रत्येक पत्नि के लिए अलग-अलग महलों का निर्माण करवा सकते थे' (रेजावी, 1998: 108)। फतहपुर सीकरी के संबंध में ब्लेक के इस तर्क का कि लघु रूप में शहर कुलीन जनों के निवास, राजकीय निवास के 'नकल' (satellite) के रूप में विकसित हुए, रेजावी ने इसका भी विरोध किया है। उनके अनुसार (1998: 109) कुलीन जनों के निवास स्थान मुख्य रूप से नगर के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में आगरा दरवाजा और तानसेन बारादरी के बीच में थे, हालांकि कुछ कुलीन जन नगर के अंदर अजमेरी दरवाजे के आस-पास भी रहा करते थे। 'शहर में पानी की आपूर्ति के लिए विशाल जलीय व्यवस्था, कुशल एवं योजनाबद्ध सड़कें, गलियाँ और कूचे, बड़ी संख्या में स्मारकीय उद्यान, सराय, और अच्छी तरह से परिभाषित उपनगरों की उपस्थिति इस बात की ओर इंगित करती है कि मुगल वास्तुकारों ने न केवल शहरी परिदृश्य को नया रूप दिया बल्कि सार्वजनिक सेवाओं की भी अच्छी व्यवस्था की'(रेजावी, 1998: 26)।

22.4 शिविर नगर

17वीं शताब्दी के विदेशी यात्री फ्रेंकोइस बर्नीयर ने यह टिप्पणी की थी कि भारतीय नगर मात्र 'शिविर नगर' थे। हालंकि इसमें कोई शक नहीं था कि मुगल दरबारों में 'असाधारण गतिशीलता' व्याप्त थी तथा वे राजप्रासादों की प्रतिकृति थे और ऐसा लगता था मानो पूरा नगर ही चल रहा हो। फादर मॉन्सरेट (1590) ने उल्लेख किया है कि अकबर के शिविर की लंबाई तकरीबन 2.5 किलोमीटर के आसपास हुआ करती थी, साथ ही उनके सभी अनुचर, मंत्री और नौकर-चाकर भी साथ-साथ ही चला करते थे। बर्नीयर के विचारों को आधार मानकर कार्ल मार्क्स ने भी यह दोहराया कि शहरी विकास की गति कम होने का मुख्य कारण यह था कि भारत के नगर केवल सैन्य शिविर थे। इस तथ्य से बिल्कुल इनकार नहीं किया जा सकता कि शिविर के आसपास के क्षेत्रों में वाणिज्यिक गतिशीलता आ जाती थी। लेकिन यह कहना कि मुगल शहरों में सम्राट के बिना कोई स्वतंत्र वाणिज्यिक व्यवहार्यता नहीं थी और वहां बाजारों के लिए कोई स्वतंत्र स्थान उपलब्ध नहीं कराए जाते थे, इस तर्क को बेवजह तूल दिया गया लगता है। आगरा, फतहपुर सीकरी और शाहजहानाबाद जैसे राजधानी नगर जीवंत वाणिज्यिक केंद्र थे। शाहजहानाबाद में प्रमुख बाजारों की दो श्रृंखलाएँ थीं – फैज बाजार, उर्दू बाजार और फतहपुरी बाजार। चांदनी चौक में हर तरफ दुकानें थीं। बर्नीयर ने दिल्ली के बाजारों और वहां बिकने वाली वस्तुओं की अत्यधिक प्रशंसा की है। सादुल्लाह खान चौक बाजार की प्रशंसा करते हुए बर्नीयर (1934: 243) लिखता है, 'यहां भी नाना प्रकार की चीजों का बाजार लगता है; जो ... सभी प्रकार के नीमहकीम और बाजीगरों के लिए एक समागम स्थल है।'

सीकरी में व्यापारियों और पेशेवर वर्गों के निवास स्थान आस-पास हुआ करते थे, जो इस बात के परिचायक थे कि 'राजनीतिज्ञों और व्यापारियों के बीच घनिष्ठ संबंध थे' (रेजावी, 1998: 36)। उस वक्त भी जब फतहपुर सीकरी मुगल राजधानी शहर था, 1581 में हाकिम अबुल फतह गिलानी और 1584 में राल्फ फिच द्वारा फतहपुर का उल्लेख एक जीवंत वाणिज्यिक केंद्र के रूप में किया गया था; बाद में लगभग तीस साल बाद विलियम फिंच जहां, यहाँ के महल और अन्य मकानों की उजाड़ स्थिति का उल्लेख करता है वहीं वह इसे नील उत्पादन के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में वर्णित करता है। पेल्सर्ट (2009: 4), जो जहांगीर (1605-1627) के शासनकाल में आगरा आया था, यह वह वक्त था जब सिकंदरा को राजधानी शहर के रूप में मुगलों द्वारा काफी पहले (1586) त्याग दिया गया था, इसके वाणिज्यिक महत्व की काफी प्रशंसा करता है:

> नदी के दूसरी ओर सिकंदरा नाम का एक शहर है [यानी, फतहपुर सीकरी], अच्छी तरह से निर्मित और भरी पूरी आबादी वाला, जहाँ मुख्य रूप से बनिया

> व्यापारी रहा करते थे, यहां से होकर ही सभी व्यापारिक माल को गुजरना होता था ... यहां नूरजहाँ बेगम के अधिकारियों, जिन्होंने यहाँ अपनी सराय बनाई, वे यहां एकत्रित सभी सामानों पर कर इकट्ठा करते थे, उसके बाद ही माल को नदी के पार भेजा जा सकता था...

बर्नीयर और ब्लेक की अवधारणाएं *मध्यम वर्ग*, शहरी *मुफलिस* और शिल्पकार वर्गों की पूरी तरह से अनदेखी करती है। लगभग सभी मुगल शहरों में पेशेवर वर्गों, कारीगरों और कामगार वर्गों के लिए अलग-अलग मोहल्ले होते थे। लगभग सभी यूरोपीय यात्रियों द्वारा मुगल बाजारों की चहल-पहल का बखूबी उल्लेख किया गया है, लेकिन इनके द्वारा इसे भी पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया। इस प्रकार यह एक ऐसी धारणा पैदा करता है कि शहरों का विकास एक नवीन घटना है, यानि अतीत में शहरों का विकास नहीं हुआ था। पेल्सर्ट (2009: 9) ने स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख किया है कि आगरा और सीकरी नगर कारीगरों से भरे थे, ये नगर विशेष रूप से अपने कालीन उद्योग के लिए जाने जाते थे, लेकिन 'नगर में बड़ी संख्या में सभी प्रकार के कारीगर हुआ करते थे'। बर्नीयर ने दिल्ली में समृद्ध व्यापारियों की मौजूदगी का एक स्पष्ट विवरण भी दिया: 'इन गलियों में मनसबदारों, छोटे उमराओं, न्याय अधिकारियों, समृद्ध व्यापारियों और अन्य लोगों के निवास स्थान हैं...' (बर्नियर, 2008: 246)। स्पष्ट रूप से यहां बड़े पैमाने पर व्यापारी वर्ग रहता था, जिनके नगर में स्थायी घर और गोदाम होते थे, और ये शिविर के साथ-साथ चलने को भी मजबूर नहीं थे। हालांकि, इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि शाही परिवार और कुलीन जनों द्वारा उत्पन्न मांग नगर को जीवंतता और जीवन शक्ति प्रदान करने के लिए विशिष्ट थी।

गतिशील शहर

मोहम्मद घारिपोर और मनु पी. सोबती (2015: 22–23) ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि आमतौर पर 'शहर रूपी' मोबाइल टेंट (गतिशील शिविर) इस्लामिक शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। उनका तर्क है कि 'इस्लामी बस्तियों में एक असामान्य दोहरापन था – ये एक जगह स्थिर भी होते थे और साथ ही खानाबदोश की तरह चलायमान भी थे'। इस 'सांस्कृतिक दोहरेपन' ने 'तंबू और महल के बीच के संबंध को प्रगाढ़' बनाया। उनका तर्क है कि 'प्रारंभिक इस्लामी शहरों का निर्माण प्रवासी जनसंख्या द्वारा किया गया ... जिसके कारण इन असमान वातावरणों में न सिर्फ शहरीपन का विशेष चरित्र था, बल्कि इसमें शहरी और उप नगरीय जिलों का भी निर्माण हुआ (घारिपोर एवं सोबती, 2015, 24)।

शाही शिविर, इस्लामी शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। यहां तक कि बाबर ने भी कभी किसी भी महल परिसर की स्थापना/निर्माण नहीं किया बल्कि खुले में ही रहा करता था, इसीलिए उसने आगरा में उद्यान परिसरों की स्थापना की, जहाँ वह अक्सर अपने *बाग-ए हश्त बिहिश्त* में रहता था। अकबर द्वारा आगरा के किले और फतहपुर सीकरी के निर्माण की योजना मुख्य रूप से शाही 'शिविरों' पर आधारित थी, बल्कि अकबर के राजधानी नगर सीकरी की योजना 'चलायमान गतिशील शिविर नगरों' पर आधारित थी (रेजावी, 2013: 206)। अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखने, आंतरिक विद्रोहों को दबाए रखने और बाह्य खतरों का सामना करने के लिए मुगल सम्राटों को हर समय एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर चलायमान रहना पड़ता था और इसीलिए वे इन गतिशील शिविरों को अपने 'चलायमान महलों' के रूप में इस्तेमाल किया करते थे। बर्नीयर ने इन शिविरों का सजीव चित्रण किया है जो महल की तर्ज पर ही संरचित थे:

> जब भी राजा सैन्य धूमधाम के साथ यात्रा करता है, वह हमेशा दो निजी शिविरों में रहता है; यानि टेंट के दो अलग-अलग समूह होते हैं। इन शिविरों में से एक अग्रिम शिविर होता था, जिसे वर्तमान शिविर से एक दिन पहले ही अग्रिम उस

> स्थान पर निर्मित किया जाता था ... यह शिविर पेश-खाना या घर, वह जो पूर्वगामी हो, के नाम से जाना जाता है, (बर्नियर, 1934: 359)।
>
> प्रत्येक शिविर का सामान ढोने के लिए 100 हाथियों, 500 ऊंट, 400 गाड़ियां और 100 वाहकों की आवश्यकता होती है। यह 500 सैनिकों, *मनसबदारों* और अहदियों द्वारा अनुरक्षित होते हैं। इसके अतिरिक्त हजार फर्राश/ईरानी, तुरानी और हिंदुस्तानी, 500 अग्रदूतों, 100 जल वाहकों, 50 बढ़ई, तंबू-निर्माताओं और मशालची, 30 चमड़े के काम करने वाले मजदूर और 150 सफाई कर्मचारी भी साथ होते हैं (अबुल फजल, 1977, *आईन* 16: 49)।

बर्नियर (1916: 359-372) औरंगजेब के शिविर का विस्तृत उल्लेख करता है, जो दिल्ली से लाहौर होकर कश्मीर मार्ग पर था, जिसके साथ बर्नियर ने स्वयं भी यात्रा की थी। शिविर में *दीवान-ए आम-ओ खास* (जो शिविर की सबसे बड़ी संरचना थी); साथ ही *गुसल खाना, कलवत खाना, जनाना, चौकी खाना, शाही बाजार,* उमराओं के तंबू तथा *नक्कार खाना* भी थे। व्यापारी और सभी प्रकार के शिल्पकार भी शिविर का एक अभिन्न अंग थे। इस प्रकार शिविर नगर में बड़े पैमाने पर शाही परिवार, कुलीन जन, सैनिक और शाही अनुचर हुआ करते थे, शिविरों में अलग से राजमहल और शाही बेगमों का निवास स्थान भी होता था। इन शिविरों की संरचनाएँ इतनी बड़ी होती थीं कि अकबर के शासन काल के दौरान पूर्व-गढ़ित (pre-fabricated) संरचनाओं का प्रयोग किया जाने लगा। इसके अलावा, जहां कहीं भी इन 'शाही शिविरों' को लगाया जाता था, वहां आमतौर पर व्यावसायिक गतिविधियाँ तेज हो जाती थीं। हमें लगातार संदर्भ मिलते रहे हैं कि अधिक मांग के कारण व्यापारी और अनाज विक्रेता अपने माल के साथ उन क्षेत्रों में पहुंच जाते थे। नतीजतन, जिन क्षेत्रों से ये शिविर गुजरते थे, वहाँ वस्तुओं की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाती थी। शिविरों के प्रयाण के दौरान साम्राज्य की सभी नियमित गतिविधियां शिविर के भीतर ही आयोजित की जाती थीं – यहां तक कि उर्दू-ए *मुअल्ला* में ढाले गए सिक्के भी हमें प्राप्त होते हैं। इस प्रकार, बर्नियर और अबुल फजल द्वारा प्रदान किए गए शाही शिविरों का विवरण स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि मुगल शहरों को किसी भी तरह से 'शिविर नगर' नहीं कहा जा सकता, बल्कि मुगल शिविर वास्तव में गतिमान शहर होते थे।

22.5 ग्रामीण-शहरी नैरंतर्यः कस्बा

यूरोपीय यात्रियों द्वारा मुगल शहरों को अक्सर गांवों के समूह के रूप में वर्णित किया गया है। पेल्सर्ट (2009: 1) ने आगरा नगर के विकास पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'यह मात्र एक गांव था, जो बयाना के अधिकार क्षेत्र में पड़ता था, जब तक बादशाह अकबर ने 1556 में इसे अपने निवास के लिए नहीं चुना।' इरफान हबीब का तर्क है कि 'भारतीय गांव एक स्थिर आर्थिक इकाई थे, जो अपनी खपत की जरूरतों के लिए अनिवार्य रूप से आत्मनिर्भर थे'। व्यापार एकतरफा – 'गांवों से नगर की ओर था'। नमक और गुड़ तथा कुछ शहरी विलासिता की वस्तुओं, जो गावों में अभिजात्य वर्ग के लोगों के लिए व्यापार के उद्देश्य से भेजे जाते थे, के अतिरिक्त, की मांग गावों में नहीं थी (हबीब, 1999: 89-90; हबीब, 2017: 186)। के. एन. चौधरी (1978: 81) ने भी इस बात की पुष्टि की है कि 'व्यापार निश्चित तौर पर एक ही दिशा में होता था'। इस प्रकार, इरफान हबीब और के. एन. चौधरी का मानना है कि मध्ययुगीन शहरों की प्रकृति परजीवी थी। उनके अनुसार, 'ग्रामीण अधिशेष का बड़ा हिस्सा [भू-राजस्व के रूप में] एकत्रित किया जाता था, जिससे ग्रामीण बाजार की स्थापना की स्थिति पैदा हुई।' इस प्रकार, 'कृषि क्षेत्र से भारी राजस्व का संग्रह और उसका नियंत्रण एक छोटे से शासक वर्ग के हाथों में आ गया, इस प्रकार, मुगल काल के दौरान शहरी क्षेत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था का विशेष विस्तार हुआ (हबीब, 2017: 190, 212)। हालांकि, चेतन सिंह का तर्क है कि 'सत्रहवीं शताब्दी में शहरों और गांवों के बीच परस्पर सहजीवी संबंध थे'

(सिंह, 1991: 174)। उनका तर्क है कि मध्ययुगीन पंजाब में शहर प्राय: समृद्ध कृषि क्षेत्रों में स्थित थे। गांवों से शहरों को खाद्य पदार्थ और कच्चे माल की आपूर्ति की जाती थी, वैसे ही महत्वपूर्ण शहरों पर गांवों की निर्भरता भी थी। अगर कृषि उत्पादों की मांग में कमी आती तो गांवों में भी समान रूप से 'आर्थिक संकट' बढ़ जाता।

सल्तनत काल में *कस्बे*, ग्राम-नगरों के रूप में विकसित होने लगे थे। हालांकि, *कस्बों* का विकास मुगल काल में वास्तविक रूप से हुआ। अत्यधिक मुद्रीकरण और जीवंत व्यावसायीकरण ने *कस्बों* के विकास को बल दिया। शहरों में कच्चे माल और खाद्य पदार्थों की मांग और साथ ही नकदी में राजस्व अधिशेष की निकासी ने व्यापार को और भी बढ़ावा दिया। इससे मध्य स्तर के और छोटे शहरों के रूप में *कस्बों* का विकास हुआ। ऐसा नहीं है कि कस्बा कोई नई परिकल्पना थी। सल्तनत काल में 'गांव जिसमें एक किला होता था' उसे *कस्बा* कहते थे, सोलहवीं और सतरहवीं शताब्दी तक 'गांव जिसमें बाजार होता था' उसे *कस्बा* कहा जाने लगा (चन्द्रा, 2005: 85)। उच्च स्तर के मुद्रीकरण के परिणामस्वरूप कस्बों की भूमिका में स्पष्टतः बदलाव आना शुरू हो गया। सतीश चंद्रा (2005: 86) का तर्क है कि *कस्बा*, गांव और शहर के बीच करीबी पारस्परिक संबंध मौजूद थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि *कस्बा*, 'कृषि उत्पादन के विकास और मौद्रिक-अर्थव्यवस्था के विकास का एक अभिन्न अंग' था (चन्द्रा, 2008: 97)। यहां गांव के अभिजात्य – जमींदार, ब्राह्मण और *सासन* धारक (राजस्व मुक्त अनुदान प्राप्तकर्ता) रहते थे। चंद्रा के अनुसार इन 'छोटे शहरों ने न केवल बाजार और कृषि उत्पादों के बिक्री के केन्द्रों के रूप में काम किया बल्कि हस्तशिल्प के केंद्र के रूप में भी इनका विकास हुआ। ऊपरी गंगा घाटी के छोटे-छोटे *कस्बों* के धातुकर्म ने अफगान सैनिकों को बंदूकों और अन्य सभी आवश्यकताओं से लैस किया'। निजामुद्दीन अहमद अपनी *तबकात-ए अकबरी* में जिक्र करता है कि अकबर के शासन काल में 3200 *कस्बे* और 120 नगर (*बल्दा*/शहर) थे। आमतौर पर मुगल काल में *कस्बे*, *परगना* मुख्यालय होते थे। एम. पी. सिंह (1985) ने इस आधार पर गणना की है कि अगर मुगल काल में प्रत्येक *परगना* एक *कस्बा* था, तो सन् 1647 में 4350 *कस्बे* अस्तित्व में थे जिनकी संख्या में सन् 1720 में मामूली वृद्धि हुई और इनकी संख्या बढ़कर 4716 हो गई। आमतौर पर *कस्बे* का विकास एक बड़े गांव से एक बाजार केंद्र के रूप में हुआ जहाँ समय-समय पर साप्ताहिक बाजार या हाट लगते थे जिससे ग्रामीण और शहरी मांगों की पूर्ति हो जाती थी। पृष्ठ कृषि क्षेत्र के कारण इन *कस्बों* का विशिष्ट विकास हुआ और ये व्यापार और वाणिज्यिक केंद्र के रूप में भी उभरकर सामने आए। '*कस्बों* ने खरीद और बिक्री' और 'शहरों और नगरों के लिए आपूर्ति केंद्रों के रूप में काम किया' (भारद्वाज, 2014: 321)। यह दिलचस्प है कि अठारहवीं शताब्दी में पश्चिमी राजस्थान में, जो थार रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थित था, *कस्बों* का उदय मोटे तौर पर मंडियों और चौकियों के पारगमन चुंगी संग्रह केन्द्रों के रूप में हुआ क्योंकि ये स्थानीय व्यापार नेटवर्क पर स्थित थे; जबकि मेवात क्षेत्र में जहाँ पश्चिमी राजस्थान की तुलना में कृषि के रूप में समृद्ध भू-भाग हैं, यहाँ *कस्बों* का विकास कृषि क्षेत्र की पृष्ठभूमि में हुआ। *कस्बे* के महाजन किसानों से सीधे कृषि उत्पाद खरीदकर उसे दिल्ली, आगरा, जयपुर इत्यादि शहरों में बिक्री के लिए आगे भेज देते थे। मेवात क्षेत्र के कुछ *कस्बे* घोड़ों के लिए प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी कार्यरत थे।

अठारहवीं सदी में *कस्बों* का फिर से अभूतपूर्व विकास हुआ। दक्षिणी राजस्थान के हडौती (कोटा) क्षेत्र पर मनासारी सातो द्वारा किए गए अध्ययन से पता चलता है कि अठारहवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में कई *कस्बे* उभरे। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से एक नई प्रवृत्ति उभरी कि बाजार शहरों / गांवों की संख्या में वृद्धि हुई और इनके नाम के आखिर में *'गंज'* शब्द प्रयुक्त किया जाने लगा जैसे – गणेशगंज, किशनगंज, दौलतगंज, छत्तरगंज, रामगंज इत्यादि। दिलचस्प है कि ये बाजार ग्राम पुराने *कस्बों* के आसपास ही विकसित हुए। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित होने वाला चंद्रखेड़ी एक ऐसा

ही *गंज* था जिसका विकास पुराने *कस्बे* खानपुर के पास हुआ था। दौलतगंज और उम्मीदगंज का विकास पुराने *कस्बे* नंदगाँव के पास हुआ। सातो का तर्क है कि आंकड़े दर्शाते हैं कि 18 वीं शताब्दी के आखिर तक आते-आते पुराने *कस्बों* की व्यावसायिक गतिविधियाँ धीमी हो गईं क्योंकि 'वहां और ज्यादा विकास संभव नहीं था', जिसके कारण इन्हीं पुराने *कस्बों* के आसपास नए ग्रामीण/शहरी बाजारों का विकास हुआ (सातो, 1997: 57-86)। जी.एस.एल. देवड़ा (2014: अध्याय 8) के द्वारा पश्चिमी राजस्थान पर किए गए अध्ययन से भी यह पता चलता है कि मुगल शक्ति का ह्रास, अठारहवीं शताब्दी में बड़े शहरों/राजधानी शहरों के विकास के लिए हानिकारक साबित हुआ। हालांकि, अठारहवीं शताब्दी में व्यापारियों ने स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर अपनी व्यावसायिक गतिविधियां जारी रखीं, जिससे पश्चिमी राजस्थान में *कस्बों* की संख्या में इजाफा हुआ। इससे पहले, *मंडियां,* जो *कस्बों* का हिस्सा थीं, वो चुंगी संग्रह के प्रमुख केंद्रों के रूप में उभरकर सामने आईं और कालांतर में उनका स्वयं ही *कस्बों* के रूप में विकास हुआ, जैसे राजगढ़, रेनी और नोहर। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कुछ *मंडियों* की *चौकियां* भी नई *मंडियों* के रूप में उभरीं और बाद में वे *कस्बों* के रूप में विकसित हो गईं। राजगढ़ और चुरू ऐसे ही चौकियां थीं जिन्होंने बाद में *मंडियों/कस्बों* का दर्जा हासिल कर लिया और वहां बड़ी संख्या में प्रवासी बनियों और व्यापारियों ने इस क्षेत्र में वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया[1]। इस प्रकार सातो और जी.एस.एल. देवड़ा द्वारा पश्चिमी राजस्थान पर किए गए अध्ययनों से इसकी पुष्टि होती है कि अठारहवीं सदी में स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर व्यावसायिक गतिविधियों के कारण *कस्बों* की संख्या में काफी वृद्धि हुई थी। बंगाल में भगवानगोला, अजीमगंज, कटवा, कलना और चटगांव जैसे मध्यवर्ती नगरों का विकास हुआ। बंगाल में मुफस्सिल नगरों का विकास हुआ। नाडिया, ढाका, लखीमपुर और मिदनापुर सूती वस्त्रों के मुख्य क्षेत्र के रूप में उभरकर आए। इसी प्रकार, मुर्शीदाबाद-कासिमबाजार क्षेत्र के साथ-साथ राजशाही और बिश्नुपुर रेशम क्षेत्र के रूप में उभरकर आए (दत्ता, 2014: 92-93)। लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी में *कस्बों* की संख्या में गिरावट आनी शुरु हुई।

22.6 नगरीय परिदृश्य

शाही और अभिजात वर्गों द्वारा बनाए गए मुगल शहर आमतौर पर दो प्रकार के होते थे – स्वत: विकसित शहर और शाही शहर। प्रथम श्रेणी में आमतौर पर बाजार केंद्र, धार्मिक केंद्र या बंदरगाह नगर आते हैं; जबकि दूसरी श्रेणी में राजधानी नगर, प्रशासनिक केंद्र, सीमावर्ती / सामरिक नगर इत्यादि आते हैं। के.एन. चौधरी के अनुसार मुगल साम्राज्य में शहरों के पदानुक्रम मौजूद थे। उन्होंने राजधानी शहरों (दिल्ली, आगरा, लाहौर, अहमदाबाद, पटना, बुरहानपुर और उत्तर-पश्चिम के नगर काबुल और कांधार) को मुख्य शहरों (जो पूरे साम्राज्य को प्रभावित करते थे) के रूप में परिभाषित किया है जिनकी श्रेणीबद्धता राजनीतिक प्रभाव से प्रेरित तथा निर्देशित थी लेकिन इनकी आर्थिक भूमिका भी दूसरे बड़े शहरों से कम नहीं थी (चौधरी, 1978: 82)। इस प्रकार चौधरी ने उनके वाणिज्यिक और औद्योगिक महत्व को अपेक्षाकृत नकारा। इसके अलावा ग्वालियर, इलाहाबाद, चुनार, औरंगाबाद और जुनार जैसे शहरों को 'सैन्य नगर' माना जो साम्राज्य को 'सैन्य रूप से सामरिक शक्ति प्रदान करते थे' (चौधरी, 1978: 85)। राजनीतिक रूप से शासकों से संबंध होने के कारण इन शहरों का भविष्य भी शासकों के भविष्य पर निर्भर करता था, अत: उनकी प्रकृति अपेक्षाकृत अल्पकालिक थी। विजयनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, पूना जैसे शहरों का अपने संरक्षकों की राजनीतिक शक्ति के पतन के साथ ही उनका भी ह्रास हुआ। हालांकि, पेरी एंडरसन ने सभी इस्लामिक शहरों को शाही शहरों के वर्ग में रखा। उन्होंने (1974: 504) तर्क देते

[1] कस्बों के विकास एवं उद्‌भव के विस्तृत अध्ययन के लिए देखें पाठ्यक्रम एम. एच. आई. - 05, भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास खंड 4, इकाई 20.2।

हुए कहा कि 'अव्यवस्था में बढ़ोतरी, योजना या चार्टर की कमी के तहत, इस्लामी शहरों का भाग्य आमतौर पर राज्य द्वारा निर्धारित किया जाता था, जिसकी समृद्धि पर उनकी समृद्धि निर्भर करती थी'। लेकिन एंडरसन की अवधारणा मध्यकालीन मुगल शहरों के संदर्भ में सही नहीं ठहरती। शाहजहानाबाद, आगरा, फतेहपुर सीकरी, लाहौर आदि जैसे राजधानी शहर स्पष्ट रूप से योजनाबद्ध तरीके से और शीघ्र ही व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे (इसके बारे में विस्तृत वर्णन इकाई 25 में दिया गया है)। हालांकि, इन श्रेणियों में से कोई भी अलग से विकसित नहीं हो सकती; विशेषताएं एक-दूसरे पर परस्पर व्याप्त हैं। लाहौर एक समय में सामरिक और प्रशासनिक केंद्र था, साथ ही प्रमुख रेशम मार्ग से जुड़ा प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र भी था। इसी तरह, बनारस मुख्य रूप से एक धार्मिक नगर था, लेकिन फिर भी खासकर रेशम और बेल-बूटेदार जरी (ब्रोकेड) जैसे वस्त्रों के उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। इसके बावजूद विशिष्ट उत्पादन शहर भी समृद्ध हुए। बयाना को इसके नील उत्पादन के कारण प्रमुखता मिली, वहीं अवध क्षेत्र में खैराबाद तथा दरियाबाद को वस्त्रों के उत्पादन के कारण प्रसिद्धि मिली।

17वीं शताब्दी में विभिन्न क्षेत्रों और इलाकों में नियुक्त अमीरों तथा जागीरदारों की छत्रछाया में कई शहरों का विकास हुआ। 17वीं शताब्दी के मध्य में पूरे रूहेलखंड क्षेत्र में रोहिल्ला अफगान बस गये, जिसका पूरा श्रेय बहादुर खान को जाता है जिसने करीब 50 रोहिला उप कबीलों को इस क्षेत्र में लाकर बसाया। शाहजहांपुर रोहिल्लाओं के गढ़ के रूप में उभरा। राजकुमार मुराद के नाम पर रुस्तम खान दक्खनी ने इस क्षेत्र में मुरादाबाद शहर की स्थापना की। 1713 में एक अन्य अफगान अमीर मुहम्मद खान बंगश ने फर्रुखाबाद शहर की नींव रखी और वह अपने साथी देशवासियों के साथ यहीं बस गया। इसी प्रकार, इटावा के निकट, यकदिल खान ने यकदिलाबाद (एकदिल) की स्थापना की, शुरूआत में 1629-32 के दौरान उन्होंने यहां एक सराय और एक मस्जिद की स्थापना की थी।

22.6.1 योजना और किलाबंदी

पेरी एंडरसन (1974: 504) ने मध्यकालीन एशियाई शहरों की विशेष रूप से आलोचना की है क्योंकि उनका मानना है कि इनमें योजना का पूर्ण अभाव है:

> जल्दबाजी में बनाई गई बस्तियां तथा उनका शीघ्र ही परित्याग के अपने पैटर्न के कारण, इस्लामी शहरों में प्रशासनिक या वास्तुकला संबंधी ठोस आंतरिक संरचना की कमी थी। वे सार्वजनिक केंद्रों या स्थानों के बिना अस्त व्यस्त सड़कों और इमारतों की भूलभुलैया मात्र थीं; उनका सकेंद्रण केवल मस्जिदों और बाजारों के आस-पास था; समस्त स्थानीय व्यापार उनके चारों ओर ही सिमटा हुआ था।

लेकिन, एंडरसन के विचार के विपरीत योजना सभी मुगल संरचनाओं का मूल था। *बाबरनामा* की एक पेंटिंग में बाबर और उसके वास्तुकार को बाग के नक्शे के साथ दर्शाया गया है, जबकि अन्य कई लोग माप और अन्य गतिविधियों में व्यस्त थे। शाहजहानाबाद मुगल साम्राज्य के योजनाबद्ध नगर का एक आदर्श उदाहरण है। मुगल शासन में एक अलग भवन (*इमारत*) निर्माण विभाग की स्थापना हुई जिसका प्रमुख *मीर-ए इमारत* होता था। अबुल फजल ने अपनी *आइन-ए अकबरी* में इस संबंध में एक अलग पूरा अध्याय *आइन-ए इमारत* के नाम से लिखा है। उसके द्वारा भवन निर्माण विभाग में कार्यरत समस्त कारगरों (*अमला-ओ फैला-ए इमारत*) का उल्लेख है। इस विभाग का एक अलग दारोगा हुआ करता था। शाही निर्माण कार्यों के लिए अलग से वास्तुकार (*मुहिंदस/मीमार*) होते थे जो निर्माण-कार्य देखते थे। शाहजहानाबाद के मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद और उस्ताद हमीद थे। ये वास्तुकार विस्तृत योजना (*तरह*)

बनाते थे जबकि *नक्काश,* ट्रेसर थे और *परचीनकार* पत्थर को तराशकर नक्काशी करने वाले थे। मुगल साम्राज्य के चाहे महल हों, नगर हों या फिर बाग सभी के लिए सर्वप्रथम योजना बनाई जाती थी। *आइन* में भवन निर्माण से संबंधित कारीगरों की विस्तृत टीम का वर्णन है – *गीलकर* (गारा-मजदूर), *संगतराश* (पत्थर काटने वाले), *खिश्त-मालान* (राजगीर), *खिश्त-पूजान* (ईंट पकाने वाले), *आहक पूजान* (चूने के कारीगर), *दुरूदगारन। नज्जार* (बढ़ई), आदि। *मुशरिफ-ए इमारत* एक लेखाकार था जो भवन निर्माण संबंधी वित्तीय मुद्दों को देखता था (रेजावी, 2013: 22-24)।

समरकंद और बुखारा जैसे शहर अच्छी तरह से किलेबंद थे, उसी प्रकार उपमहाद्वीप के मध्यकालीन शहर भी या तो मोटी बाहरी दीवारों या फिर गहरी खाई से सुरक्षित किए गए थे। हालांकि, जहां मध्य एशियाई शहरों में किलेबंद दीवारों के अंदर महलों और अमीरों के निवास स्थान थे, वहीं मुगल शहरों में अंतर स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है। सल्तनत में किलेबंदी शाही प्रतिष्ठानों तक सीमित थीं और आम लोग किलेबंद दीवारों के बाहर रहते थे। पहली बार तुगलक शासकों ने महल के अतिरिक्त शहर को भी किलेबंद किया। मुगल शहरों में आमतौर पर महल, अमीर और आम जनता, व्यापारियों आदि की विद्यमानता होती थी, जिनका विस्तार उपनगरों (*रबाज*) तक था, जो 'राजनीतिक सत्ता और वाणिज्यिक वर्गों के बीच करीबी सहजीवंतता की ओर ईंगित करता है' (रेजावी, 1998: 105)। विदेशी सीमाओं से लगे शहरों लाहौर, अहमदाबाद, भरूच, बड़ौदा और कैम्बे को मोटी दीवारों की प्राचीरों (battlements) से सुरक्षित किया गया जबकि शाहजहानाबाद, अजमेर, मुल्तान और कोल आदि शहरों को दीवारों से किलेबंद किया गया था। दिलचस्प तथ्य है कि आगरा (जिसे गहरी खाई द्वारा सुरक्षित किया गया था) और उज्जैन शहर में कोई दीवार नहीं थी; यद्यपि इसके निकट स्थित शहर फतेहपुर सीकरी को दीवार द्वारा विशेष रूप से सुरक्षित किया गया था (रेजावी, 1998: 105)। तैमूरी महलों के विपरीत मुगल महल संरचना हमेशा किलेबंद थीं। इसके अतिरिक्त तैमूरी महल शहर की आबादी से दूर शहर की परिधि में स्थित थे। हालांकि मुगल महल हमेशा नदियों के किनारे स्थित थे लेकिन हमेशा उनका स्थान शहर के केंद्र में होता था। एशर का तर्क है कि झरोखा दर्शन की प्रथा के प्रचलन के कारण बेताब जनता को राजा की झलक देखने के लिए प्रतिदिन महल जाने की आवश्यकता होती थी, अतः महल का केंद्र में होना आवश्यक था, ताकि आम जनता के लिए वहां पहुँचना सुगम्य हो। चूंकि महल शहर के केंद्र में थे, इसलिए 'शासकीय' परिवार की 'गोपनीयता' और 'संरक्षण' के लिए किलेबंदी आवश्यक थी। इसी प्रकार, जहां तैमूरी महलों को उद्यान-प्रांगणों में स्थापित किया गया था, मुगल महलों में उद्यान थे। एशर का तर्क है कि इस प्रकार, मुगल महलों की योजना का झुकाव 'सार्वजनिक से निजी' की ओर था (एशर, 1993)।

प्रांतों में अमीरों (*मनसबदार*) – *जागीरदार, जमींदार,* और अधिकारियों (*सूबेदार, दीवान,* आदि) के निवास लगभग शाही संरचनाओं की प्रतिकृति थे। एशर इन संरचनाओं को 'उप-शाही महल' कहती हैं। एशर विचार है कि मुनीम खान खान-ए खानान द्वारा जौनपुर में निर्मित संरचनाओं (*हम्माम* और पुल) और चुनार (महल) तथा रोहतासगढ़ में राजा मान सिंह के निर्माण कार्यों का अध्ययन 'प्रौद्योगिकी और शाही शैली का तेजी से प्रसार दर्शाता है...जो उप-शाही महलों में प्रतिध्वनित होता है' (एशर, 1993: 284)। मुनिम खान के *हम्माम,* उनके प्रसिद्ध पुल और गंगा किनारे स्थित मंडप, नदी के किनारे निर्मित बारादरी, इस उप-शाही संरचना में मुगल शैली की उपस्थिति तथा मुनीम खान खान-ए खानान की सत्ता को दर्शाती है (एशर, 1993: 284) । जबकि मान सिंह का रोहतासगढ़ का किला इससे भी एक कदम आगे था। यहां, मान सिंह ने स्थानीय देवता रोहिताश्व को समर्पित एक मंदिर का निर्माण कराया और दूसरी संरचना पौराणिक नायक राजा हरिश्चंद्र को समर्पित करते हुए, का भी निर्माण कराया। यह, मानो, राजा मान सिंह द्वारा अपने महलों में सोलोमन की शाही सत्ता का प्रतीकात्मक रूप था। एशर

(1993: 285) का तर्क है, 'राजा मान सिंह ने इस महल तथा मान सिंह से जुड़ी शक्ति की आभा को मजबूत करने के लिए स्थानीय परंपराओं का भी कुशलतापूर्वक इस्तेमाल किया'। रोहतास स्थित राजा मान सिंह के महल में यहां तक कि *झरोखा* भी था, जो अनन्य रूप से शाही विशेषाधिकार था, यह उप-शाही संरचनाओं में शक्ति तथा सत्ता को अभिव्यक्त करता है।

22.6.2 *चौक*

बाजार-ए चहारसू (शॉपिंग स्क्वायर, जहां दुकानें और सड़कें एक-दूसरे को 90 डिग्री पर काटती थीं, एक फारसी और मध्य एशियाई विशेषता) जो सल्तनत कालीन शहरों की विशेषता थी, अकबर के काल में भी सतत् बनी रही। आरिफ कंधारी ने उल्लेख किया है कि 1576-77 में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में शाही अदालत से आगरा दरवाजा तक चहारसुक का निर्माण करने का आदेश दिया था। आरिफ कंधारी उल्लेख करता है कि सीकरी में *चहारसुक* के दोनों ओर अच्छी तरह से सजाई गई दुकानें थीं। हालांकि, 17 वीं शताब्दी में *चहारसुक* हिंदवी शब्द *चौक* द्वारा बदल गया। आदिल शाह की राजधानी बीजापुर, जिसे मुल्ला नुसरती ने अपने *अलीनामा* (1647) में वर्णित किया है, के अनुसार इसमें सुंदर *चौक* थे, जिसमें प्रत्येक में चार शॉपिंग सड़कें थीं, (सिद्दीकी, 2012: 49) शामिल थे। शाहजहानाबाद में चांदनी चौक, चौक सादुल्ला खान महत्वपूर्ण बाजार केंद्र थे।

22.7.3 धार्मिक स्थल

एशर का तर्क है कि चिश्ती सूफियों का मुगल सम्राटों पर बहुत प्रभाव था। उनके अनुसार, इनकी शाही शहरों की संरचनाओं के निर्धारण में प्रमुख भूमिका थी। इसी के परिणामस्वरूप, फतेहपुर सीकरी में स्थित शेख सलीम चिश्ती की दरगाह इसका ज्वलंत प्रमाण है। अजमेर में अकबर का किला तथा अना सागर पर जहांगीर एवं शाहजहां के महल और बारादरी में भी चिश्ती संत शेख मोइनुद्दीन चिश्ती के साथ शाही संबंधों की झलक साफ दिखाई देती है। इसी तरह, हुमायूं ने भी चिश्ती संत शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के ठीक बगल में ही अपनी राजधानी दीनपनाह बनाने की योजना बनाई थी। एशर का तर्क है कि बहादुर शाह द्वितीय (1837-1858) ने भी अपने महल 'जफर महल' के निर्माण का फैसला चिश्ती संत शेख बख्तियार काकी की कब्र के पास करने का लिया जो मुगल बादशाहों के 'धार्मिक सत्ता' के साथ संबंधों को दर्शाता है। इसी प्रकार, अकबर के शासन काल के इतिहासकारों द्वारा आगरा को हिन्दुस्तान के केंद्र के रूप में वर्णित करना 'अब्बासिद खलीफा अल मंसूर की बगदाद की अवधारणा' को पुष्ट करता है (एशर, 1993: 281)। एशर ने इसी अवधारणा को आगे जोड़ते हुए कहा कि मुगल काल के दौरान सफेद संगमरमर का बहुतायत में प्रयोग लौकिक सत्ता के धार्मिक सत्ता के साथ संबंध को दर्शाता है। एशर तर्क देती हैं कि सफेद संगमरमर संत प्रवृति का प्रतीक था। शेख सलीम चिश्ती की दरगाह सफेद संगमरमर से बनी है। अकबर की समस्त संरचनाओं में अपवादस्वरूप निजी सभागार था जहां संगमरमर का इस्तेमाल किया गया था। अकबर के बाद संगमरमर का इस्तेमाल शाही मकबरों (सिकंदरा तथा इतिमाद-उद्दौला के मकबरे) में किया गया; जहांगीर ने अपने महल में इसका इस्तेमाल किया; शाहजहां ने भी अपने निर्माण कार्यों में सफेद संगमरमर का प्रचुरता से इस्तेमाल किया। हालांकि, शाहजहां द्वारा *चिहिल सुतून* (सार्वजनिक सभागार) में संगमरमर का इस्तेमाल नहीं किया गया था, जहां अमीर वर्ग एकत्रित होते थे। इसी प्रकार, संगमरमर का प्रयोग पूरी तरह से सभी राजकीय मस्जिदों (*किब्ला* आम तौर पर सफेद संगमरमर का होता था) और चिश्ती दरगाहों में किया गया था। इस प्रकार, 'मुगल महलों में संगमरमर का प्रयोग शासक और दिव्य के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देता है' (एशर, 1993: 283)।

मुगलों ने अपनी शक्ति और सत्ता को वैध बनाने के लिए शहरों के पवित्र स्थानों को अपनाने की कोशिश शुरुआत से ही की। 1526 में पानीपत में जीत के बाद शुरु से ही, बाबर ने दिल्ली के सभी चिश्ती मजारों के दर्शन किए। इसे अपने नाम पर दिल्ली में खुतबा पढ़ने के बाद, जो संप्रभुता के दावे का प्रतीक था, विभिन्न चिश्ती मजारों का नियमित रूप से दौरा नगरस्केप को विनियोजित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका था। अबुल फजल ने अकबर के दिल्ली दौरे का उल्लेख जियारत के रूप में किया है। शाहजहां ने भी निजामुद्दीन औलिया की चिश्ती दरगाह पर नियमित रूप से दौरे किए। यहां तक कि शाहजहानाबाद के भव्य भवन जामा मस्जिद को भी चिश्तियों की निजामिया शाखा के तत्वावधान में रखा गया था। दिल्ली के नगरीय परिदृश्य का महत्वपूर्ण पहलू हुमायूं का मकबरा था जिसे मुगल शासकों द्वारा जियारत का प्रतीक बना दिया गया। मोहम्मद सालिह काम्बो ने शाहजहां द्वारा हुमायूं के मकबरे की यात्रा का वर्णन करते हुए इसे 'सबसे अधिक प्रतिष्ठित और पवित्र स्थल' करार दिया। कॉक का यह तर्क है कि 'वंशीय-स्मरणोत्सव' ने धार्मिक कीर्तिगान का रूप ले लिया... 1568 से, यहां तक कि हुमायूं के मकबरे के पूरा होने से पहले ही अकबर के इतिहासकार स्पष्ट रूप से सम्राट के हुमायूं के मकबरे के दौरे के बारे में वर्णन करते हैं और यहां तक कि इसे "मजारों में पवित्रतम स्थल" के रूप में वर्णित किया गया (कॉक, 1993: 13)।

22.6.4 *कारवांसराय*

व्यापारियों और यात्रियों के रहने की सुविधा के लिए *कारवांसराय* नगरीय परिदृश्य का, विशेषकर, राजधानी शहरों का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया। ये *सराय* चाहरदीवारियों से घिरी होती थीं जिनके विशाल प्रवेश द्वार थे और वे किलेनुमा पत्थर की संरचनाओं से भी युक्त थे। उनके अपने स्वयं के कुएं और बैलगाड़ियों और जानवरों के लिए अलग-अलग बाड़े भी थे। आगरा शहर में लगभग अस्सी से भी ज्यादा सरायों का वर्णन मिलता है। अकबरी सराय, भोरे की सराय, जलाल खान की सराय, एतिबार खान की सराय और सराय खोजा आगरा में अपनी विशाल संरचनाओं के लिए विख्यात थीं। हालांकि, इन सब में नूरजहां की यमुना नदी पर स्थित सराय सबसे अधिक मनमोहक थी। यहां 500 घोड़े और 2000-3000 यात्री तक ठहराए जा सकते थे। प्रत्येक कमरे की छतें मेहराबदार थीं तथा उनके साथ एक बरामदा भी था। दिल्ली में हुमायूं की कब्र के निकट हाजी बेगम ने 1560 में अरब की सराय का निर्माण कराया था जहां 300 यात्री ठहर सकते थे। फतेहपुरी बेगम और अकबरबादी बेगमों ने भी यात्रियों/तीर्थयात्रियों के रहने के लिए उनके द्वारा बनाई गई मस्जिदों के निकट सरायों की स्थापना की थी। जहाँआरा बेगम ने अपने बगीचे के निकट यात्रियों के लिए जो *कारवांसराय* बनवाई थी वह सबसे अधिक शानदार थी। यह एक दो मंजिला इमारत थी। बर्नीयर (1916: 281) लिखता है:

> *करुअंसरा* (*कारवांसराय*) आर्केड के साथ एक बड़े वर्ग के रूप में है ... आर्केड के ऊपर चारों ओर एक मेहराबदार वीथिका (गैलरी) है, जिसमें स्थित कक्षों की संख्या नीचे के कक्षों की संख्या के समान है। यह जगह समृद्ध *ईरानी, उजबेग* और अन्य विदेशी व्यापारियों के लिए समागम स्थल है, जिन्हें सामान्य रूप से खाली बड़े कक्षों में ठहराया जाता था, जहां वे पूरी सुरक्षा के साथ रहते थे, रात में उसके द्वार बंद कर दिए जाते थे।

22.7 मुगलकालीन नगरों में उद्यान

उद्यानों की परंपरा मुगलों से पहले से ही विद्यमान थी। लोदी वंश के शासकों ने सबसे पहले उद्यानों का निर्माण कराया। लेकिन, मुगल शासन काल के दौरान ये शहरी स्थानों के प्रमुख केन्द्र बन गये – ये अंतिम निवास स्थान (मुगल कब्र उद्यान) थे; शरण और मनोरंजन के स्थान; उत्सव और अभिनंदन की एक प्रमुख जगह; राजा के राज्यारोहण के

साथ-साथ उनके पदच्युत किए जाने के प्रमुख स्थल के रूप में प्रयोग किए जाते थे। हालांकि, उद्यान शासकीय आवासीय परिसरों के साथ-साथ अमीरों के निवास स्थान, जिन्हें *खानाबाग* या *सराय बस्तन* के नाम से जाना जाता था, का भी अभिन्न हिस्सा बन गये। जिम वेस्टकोट जूनियर का मानना है कि 'उद्यान में होने वाले कार्यक्रम ज्यादातर राजा की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के प्रतीक बन गए'। 'उद्यान शिकायत, न्याय और सुलह से संबंधित कार्यों के निष्पादन स्थल के रूप में भी कार्य करते थे' (वेस्टकोट, 1991: 58, 60)। उद्यान उत्सव और प्रीतिभोज के लिए भी प्रमुख स्थल बन गए। बाबर कहा करता था कि उसकी आत्मा को *बाग-ए जर अफशां* में काफी शांति मिलती थी। इस प्रकार 'मृत्यु के पश्चात् राजा को उद्यान में ही चिरस्थाई शरणस्थल के रूप में विस्थापित किया जाता था'। अपने राजकाल के दौरान राजा इसके विपरीत 'निर्माण, यात्राओं और प्रदर्शन के लिए इनका इस्तेमाल करता' (वेस्टकोट, 1991: 60)। हुमायूं के नदी के किनारे स्थित उद्यान में चार दो मंजिली इमारतें (*चहार तक*) थीं, जो चार बुर्जों द्वारा एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं, जहां एक महीने लंबे समारोह, संगीत उत्सव, बौद्धिक व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था और सम्मान प्रदान करने के लिए लोगों को उपहार स्वरूप विभिन्न उपाधियां प्रदान की जाती थीं। यमुना में ऐसे अन्य चलायमान चौबारे भी थे। यहां उपलब्ध वस्तुओं की प्रकृति के बारे में ख्वांदमीर लिखता है, 'प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, पेय, पोशाकें, कपड़े, गोला-बारूद और युद्ध के हथियारों इत्यादि जो चाहे वह प्राप्त कर सकता था ...' (ख्वांदमीर: 45 वेस्टकोट, 1991: 60 से उद्धृत)। हुमायूं प्रत्येक मंगलवार और रविवार को शाही महिलाओं के साथ नदी किनारे स्थित इन उद्यानों में जाता था। *चहार बाग* में हुमायूं नए साल का जश्न मनाया करता था। अकबर की शुरुआती जिंदगी से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएं भी इन्हीं उद्यानों में हुईं – उसकी खतना की रस्म और कुश्ती प्रतियोगिता में बालक अकबर की जीत काबुल के अवर्ताह या उत्रा बाग में आयोजित हुई थी। इस प्रकार, मुगलों के तहत उद्यान शहरी केंद्रों में जीवंत गतिविधियों के स्थान थे। यूरोपीय यात्रियों ने आगरा नगर को मुगलों के उद्यानों के नगर के रूप में वर्णित किया। राजधानी-नगर फतहपुर सीकरी में कुल उनतीस उद्यान बनाए गए थे। जिसमें से बीस नगर के अंदर, छह प्राचीर के बाहर और तीन महल परिसर के भीतर स्थित थे। हयात बख्श उद्यान शाहजहां के महल का राजकीय उद्यान था जो शाहजहानाबाद में स्थित था। शाहजहां के आनंद जन्य बागों में कश्मीर और लाहौर के शालीमार बाग तथा कश्मीर का निशात बाग प्रमुख हैं। इसी प्रकार, मकबरे के प्रांगणों में स्थित बागों में हुमायूं का मकबरा और ताजमहल प्रमुख हैं। जहांगीर की पत्नी और मान सिंह की बेटी शाह बेगम का मकबरा-बाग, खुसरो बाग, जो इलाहाबाद में स्थित है, एक अन्य प्रमुख उद्यान है। जेम्स डिकी (1985: 132) मकबरे वाले उद्यान का वर्णन करते हुए लिखता है कि, 'परम आनंद की अनुभूति के लिए उद्यान भौतिक उपभोग की जगह है।' हुमायूं का मकबरा जल्द ही मुगल शासकों का मशहूर गंतव्य स्थल बन गया और वे इस मकबरे पर नियमित रूप से दर्शन के लिए जाया करते थे। ये मकबरे वाले उद्यान आम लोगों के लिए भी उपलब्ध थे।

मुगल साम्राज्य के न सिर्फ राजधानी नगर ही उद्यानों से सजे हुए थे बल्कि संपूर्ण साम्राज्य में विभिन्न शासकों और अमीरों द्वारा सुंदर उद्यान बनाए गए थे। सरहिंद में अकबर के शासन के दौरान रफीज राखा (आम-खास बाग) के बगीचे का निर्माण किया गया, वह इतना प्रसिद्ध था कि शाहजहां छह बार इस सरहिन्द उद्यान में भ्रमण के लिए गया था।

इस प्रकार उद्यानों का मुगल नगरों के परिदृश्य में केंद्रीय स्थान था। मुगलों ने *चहारबाग* की फारसी अवधारणा की शुरुआत की जहां उद्यान परिदृश्य दैवीय स्थान का प्रतीक था। आनंद उद्यान आमतौर पर *चहारबाग* परंपरा के अनुरूप बनाए गए थे, जिन्हें *बारादरी* (मंडप) और पानी के हौजों और सेतु मार्गों तथा नहरों के साथ चार भागों में विभाजित किया जाता था। फतहपुर सीकरी में, कुल उनतीस उद्यानों में से पंद्रह

चहारबाग थे। बाबर ने स्वयं खानवा (1527) में हुई अपनी जीत के उपलक्ष्य में सीकरी में एक उद्यान (*बाग-ए फतह*) के निर्माण का आदेश दिया था। एक अन्य उद्यान *बाग-ए निलोफर* (कमल उद्यान) बाबर के द्वारा धौलपुर में बनवाया गया; दोनों ही *चहारबाग* परंपरा में थे। हालांकि, सभी उद्यान *चहारबाग* परंपरा के अनुरूप नहीं बनाए गए थे। हसन अब्दाल के निकट, तक्षशिला से 1 किलोमीटर दूर, वाह में निर्मित मुगल उद्यान की संरचना समरूप नहीं थी।

22.8 मुगलकालीन नगरों की जनसंख्या

शहरी जनसंख्या में आबादी की वृद्धि का जो सिलसिला दिल्ली सल्तनत के दौरान शुरू हुआ वह मुगल काल में भी अनवरत जारी रहा। शहरों में अक्सर आबादी काफी घनी होती थी। इरफान हबीब ने आंकड़ों के आधार पर यह बताया है कि मुगलकालीन भारत में शहरी जनसंख्या कुल आबादी का 12.5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत के आस-पास था। जबकि शीरीन मूसवी (2015: 410) के अनुमान के अनुसार सन् 1600 के लगभग मुगलकालीन भारत में शहरी जनसंख्या कुल आबादी का लगभग 15 प्रतिशत थी। इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी में उत्तरी भारत में शहरी जनसंख्या में वृद्धि मध्य अठारहवीं शताब्दी के ब्रिटिश भारत की तुलना में कहीं अधिक थी। पश्चिमी यूरोप में यह वृद्धि लगभग 13.8 प्रतिशत और मध्य यूरोप में 7.1 प्रतिशत थी (दत्ता, 2014: 87)। इस प्रकार मध्ययुगीन यूरोप की तुलना में मध्ययुगीन भारत में शहरी आबादी का विकास अपेक्षाकृत अधिक था।

मध्यकालीन भारत के प्रमुख शहरों की जनसंख्या के रफ अनुमान अथवा उसका समसामयिक यूरोपीय शहरों के साथ तुलनात्मक आकलन तत्कालीन वृतांतों में मिलता है। राल्फ फिच ने 1584 में फतहपुर सीकरी और आगरा की 'लंदन से बड़े और अधिक घनी आबादी वाले' शहर के रूप में तुलना की थी। जॉर्डन ने आगरा का उल्लेख दुनिया के सबसे बड़े नगर के रूप में किया और वह यह भी लिखता है कि तुलना में यह काहिरा से भी बड़ा था। लाहौर की तुलना कुस्तुंतुनिया से और अहमदाबाद की तुलना लंदन के साथ की जाती थी। बर्नियर (1916: 238-239) वर्णन करता है कि 'दिल्ली और आगरा की सुंदरता क्षेत्र-विस्तार और निवासियों की जनसंख्या में पेरिस को मात करती थी।' स्टीफन ब्लेक के अनुमान के अनुसार शाहजहाँनाबाद नगर और इसके उपनगरों की आबादी लगभग 475,000 से 550,000 के आस-पास थी। उनका तर्क है कि आबादी का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा किलेबंद शहरों के अंदर रहता था (ब्लेक, 1991: 67)।

अनुमानित जनसंख्या

नगर	वर्ष	जनसंख्या
आगरा	1609-43	500,000 600,000
पटना	1671	200,000
मसूलीपट्टनम्	1672	200,000
सूरत	1700	20,000

स्रोत: हबीब, 2017 : 212.

इस प्रकार, 'कृषि क्षेत्र से अत्यधिक राजस्व का संग्रहण और एक छोटे सत्तारूढ़ वर्ग के हाथों में उनके संकेंद्रण के आधार पर, भारतीय अर्थव्यवस्था ने मुगल काल के दौरान शहरी क्षेत्र में काफी विस्तार हासिल किया। शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा न केवल औद्योगिक शिल्प में नियोजित था, बल्कि उस समय की प्रति व्यक्ति उत्पादकता इस शताब्दी (20वीं) के शुरुआती दशकों की प्रति व्यक्ति उत्पादकता से ज्यादा थी (हबीब, 2017: 212-213)।

22.9 सारांश

मुगलकाल में विस्थापित सार्वभौमिक शांति (Pax-Mughalica) ने मध्य काल में शहरीकरण के विकास को तीव्रता प्रदान की। राजस्व अधिशेष का शहरों की तरफ ने *कस्बों* के विकास में विशेष मदद की। यद्यपि राजधानी नगरों को राजनीतिक संरक्षण के तहत प्रमुखता प्राप्त हुई थी, लेकिन उनके व्यावसायिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता। इसी प्रकार, शहरी शिल्पों के विकास ने बयाना और खैराबाद जैसे विशिष्ट शहरों को एक अलग पहचान दी। इस प्रकार मुगल भारत में शहरीकरण अद्वितीय था और उसने उस काल के दौरान पश्चिमी यूरोप के शहरों के विकास को भी पीछे छोड़ दिया।

22.10 अभ्यास

1) मुगल शहरों की स्थानिक विशेषताओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

2) मुगल राजधानी नगर किस हद तक शक्ति और सत्ता के केंद्रों का प्रतीक थे?

3) क्या आप स्टीफन ब्लेक की पितृसत्तात्मक-नौकरशाही शहरों की अवधारणा से सहमत हैं?

4) बर्नियर के शिविर नगरों की विचारधारा का परीक्षण कीजिए।

5) मुगल नगर किस सीमा तक ग्रामीण-शहरी नैरंतर्य को दर्शाते हैं?

6) मुगल नगरीय परिदृश्य की विशेषताओं की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

7) 'उद्यान, मुगल शहरों के शहरी परिदृश्य की 'प्रमुख' विशेषता मानी जाती है'। टिप्पणी कीजिए।

22.11 सन्दर्भ ग्रंथ

अबुल फजल अल्लामी, (1977) *दि आइन-ए अकबरी*, अनुवाद एच. ब्लॉकमैन, भाग-1, तृतीय संस्करण, (नई दिल्ली: ओरियण्ट बुक्स रिप्रिंट कॉपरेशन).

एण्डरसन, पैरी, (1974) *लीनिएजेस ऑफ एन एब्सोल्युटिस्ट स्टेट* (लंदन: एन एल बी).

एशर, कैथरीन बी., (1993) 'सब-इम्पीरीयल पैलेसेजः पावर एण्ड अथॉरिटी इन मुगल इण्डिया', गुल्रू निकिपोग्लु, संपादित, *आर्स ओरिएण्टलिस*, भाग 23 (अन्न आर्बर: डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन)

बर्नियर, फ्रांकायस, (1916) *ट्रैवल्स इन दि मोगल एम्पायर, ए.डी. 1656-1668*, विन्सेन्ट ए. स्मिथ द्वारा संशोधित द्वितीय संस्करण (लंदन: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस).

भारद्वाज, सूरजभान, (2014) 'कस्बाज इन मेवात इन दि मिडिवल पीरियड: ए स्टडी ऑफ दि इण्टरफेस बिटवीन दि टाउनशिप एण्ड दि कन्ट्रीसाइड', शर्मा, योगेश एवं पायस मालेकन्डाथिल (सं.), *सिटीज इन मिडिवल इण्डिया* (नई दिल्ली: प्राइमस बुक्स).

ब्लेक, स्टीफन, (1991) *शाहजहानाबाद: दि सॉव्रिन सिटी इन मुगल इण्डिया, 1639-1739* (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

चन्द्रा, सतीश, (2005), 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ अर्बनाइजेशन इन मिडिवल इण्डिया' बंगा इन्दू (सं.), *दि सिटी इन इण्डियन हिस्ट्री: अर्बन डेमोग्राफी, सोसाइटी एण्ड पॉलिटिक्स* (नई दिल्ली: मनोहर).

चन्द्रा, सतीश, (2008), 'कस्बाज इन वेस्टर्न राजस्थान: स्मॉल टाउन्स ड्यूरिंग दि सेवन्टीन्थ सेन्चुरी' चन्द्रा, सतीश, *स्टेट, प्ल्यूरलिज्म, एण्ड दि इण्डियन हिस्टॉरिकल ट्रैडिशन* (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

चौधरी, के. एन. (1978) 'सम रिफ्लेक्शन ऑन दि टाउन एण्ड कन्ट्री इन मुगल इण्डिया', मॉडर्न एशियन स्टडीज, भाग 12, नं. 1.

चिनॉय, शमा मित्र, (2015 [1998]), *शाहजहानाबाद, अ सिटी ऑफ देल्ही, 1638-1857* (नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स).

दत्ता, रजत, (2014), 'दि रूरल-अर्बन कॉन्टीन्यूम एण्ड दि मेकिंग ऑफ ए प्रोटो-इंडस्ट्रीयल इकोनॉमी इन अर्ली मॉडर्न इण्डिया: ए व्यूव फ्रॉम दि ईस्ट', शर्मा, योगेश एवं पायस मालेकन्डाथिल (सं.), *सिटीज इन मिडिवल इण्डिया* (नई दिल्ली: प्राइमस बुक्स).

देवड़ा, जी.एस.एल., (2014), 'फॉर्मेशन एण्ड ग्रोथ ऑफ मण्डीस एण्ड चौक्स इन वेस्टर्न राजस्थान, ए.डी. 1700-1830', शर्मा, योगेश एवं पायस मालेकन्डाथिल (सं.), *सिटीज इन मिडिवल इण्डिया* (नई दिल्ली: प्राइमस बुक्स).

डिक्की, जेम्स, (1985) 'दि मुगल गार्डन: गेटवे टू पैराडाइज', *मुकरानास*, भाग-33.

घरीपोर, मोहम्मद एवं मनू पी. सोबती, (2015) 'मोबाइल अर्बनिज्म: टेन्ट सिटीज इन मिडीवल ट्रैवल राईटिंग', घरीपोर, मोहम्मद, एवं निले ओज्लू, *दि सिटीज इन दि मुस्लिम वर्ल्ड: डिपिक्शन बाई वेस्टर्न ट्रैवल राइटर्स* (ऑक्सन: रूटलेज).

हबीब, इरफान (1999) *एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, 1556-1707* (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

हबीब, इरफान (2017) 'पोटेंशियलिटीज ऑफ कैपिटलिस्टिक डेवलपमेन्ट इन दि इकोनॉमी ऑफ मुगल इण्डिया', हबीब, इरफान, *ऐस्सेज इन इण्डियन हिस्ट्री* (नई दिल्ली: तुलिका).

हैम्ब्ली, गैविन आर.जी., (1982) 'टाउन्स एण्ड सिटीज: मुगल इण्डिया', रायचौधरी, तपन एवं इरफान हबीब, *दि कैम्ब्रिज इकोनॉमी हिस्ट्री ऑफ इण्डिया*, भाग 1: *c.* 1200- *c.* 1750 (नई दिल्ली: ओरिएण्ट लॉन्गमैन).

इजुका, कीयो, (1991) 'दि शाहजहां'स कॉन्सेप्ट ऑफ टाउन प्लानिंग इन देल्ही', *इन्वायरमेंटल डिजाइन: जर्नल ऑफ दि इस्लामिक इन्वायरमेंटल डिजाइन रिसर्च सेंटर*, 1-2, पेट्रूस्सीओली अत्तीलियो, (सं.) पृ. 30-34.

महमूद, एस. हसन, (2000), *एन एटीन्थ सेन्चूरी अग्रेरियन मैनुअल: यासिन'स दस्तूर-ए-मालगुजारी* (नई दिल्ली: किताब भवन).

मूसवी, शीरीन, (2015) *दि इकोनॉमी ऑफ दि मुगल एम्पायर, c.1595: ए स्टैटिस्टीकल स्टडी* (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

पेल्सर्ट, फ्रांसिस्को, (2009) जहांगीर'स इण्डिया: *दि रिमोन्सत्रांसी ऑफ फ्रांसिस्को पेल्सर्ट*, अनुवाद डब्ल्यू.एच. मोरेलैण्ड एवं पी. गेय्ल (दिल्ली: इदाराह-ए-अदबियात-ए दिल्ली).

रेजावी, एस. अली नदीम, (1998), यूनिकनेस ऑफ दि ईस्टर्न ''इम्पीरियल सिटी?'' टेस्टिंग दि मॉडल विद फतहपुर सीकरी', श्रीमाली, कृष्णमोहन, (सं.) *रीजन एण्ड आर्किआलजी* (दिल्ली: एसोसिएशनफॉर दि स्टडी ऑफ हिस्ट्री एण्ड आर्किआलजी).

रेजावी, एस. अली नदीम, (2013), *फतहपुर सीकरी रिविजिटेड* (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

पेट्रूस्सीओली अत्तीलियो, (2015) 'दि सिटी ऐज ऐन इमेज ऑफ दि किंग: सम नोट्स ऑन दि टाउन-प्लानिंग ऑफ मुगल कैपिटल्स इन दि सिक्सटीन्थ एण्ड सेवन्टीन्थ सेन्चुरीज', जुनेजा, मोनिका, (सं.) *आर्किटेक्चर इन मिडिवल इण्डिया: फार्म्स, कॉन्टेक्स्ट, हिस्ट्रीज* (रानीखेत: परमानेन्ट ब्लैक).

सातो, मसानोरी, (1997), 'दि फॉर्मेशन प्रोसेसेस ऑफ टाउन एण्ड मार्केट टाउन्स/विलेजेज इन साउदर्न राजस्थान, 1650-1850 ए.डी.' सातो, मसानोरी, एवं बी.एल. भदानी, इकोनॉमी एण्ड पॉलिटी ऑफ राजस्थान: स्टडी ऑफ कोटा एण्ड मारवार (17वीं-19वीं सेंचुरीज) जयपुर : पब्लिकेशन स्कीम.

सिद्दीकी, इक्तिदार हुसैन, (2012) *दिल्ली सल्तनत: अर्बनाइजेशन एण्ड सोशल चेंज* (नई दिल्ली: वीवा बुक्स).

सिंह, चेतन, (1991), *रीजन एण्ड एम्पायर: पंजाब इन दि सेवन्टीन्थ सेंचुरी* (दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

सिंह, एम. पी., (1985) *टाउन, मार्केट, मिन्ट एण्ड पोर्ट इन दि मुगल एम्पायर, 1556-1707: ऐन एडमिनिस्ट्रेशन-कम-इकोनॉमिक स्टडी* (नई दिल्ली: अदम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स).

वेस्टकोट, जूनियर, जिम, (1991) 'रिचुअल मूवमेंट एण्ड टेरिटोरियलिटी ड्यूरिंग दि रेन ऑफ हुमायूँ'. *इन्वायरन्मेंटल डिजाइन*, नं. 1-2.